पुस्तक समीक्षा : चिन्तनशील अध्यापक - क्रियात्मक शोध के केस अध्ययन (The Reflective Teacher - Case Studies of Action Research) लेखिका: नीरजा राघवन; ओरिएंट ब्लैक स्वान चैन्नई (2016), xii, पृष्ठ 254, रु. 270

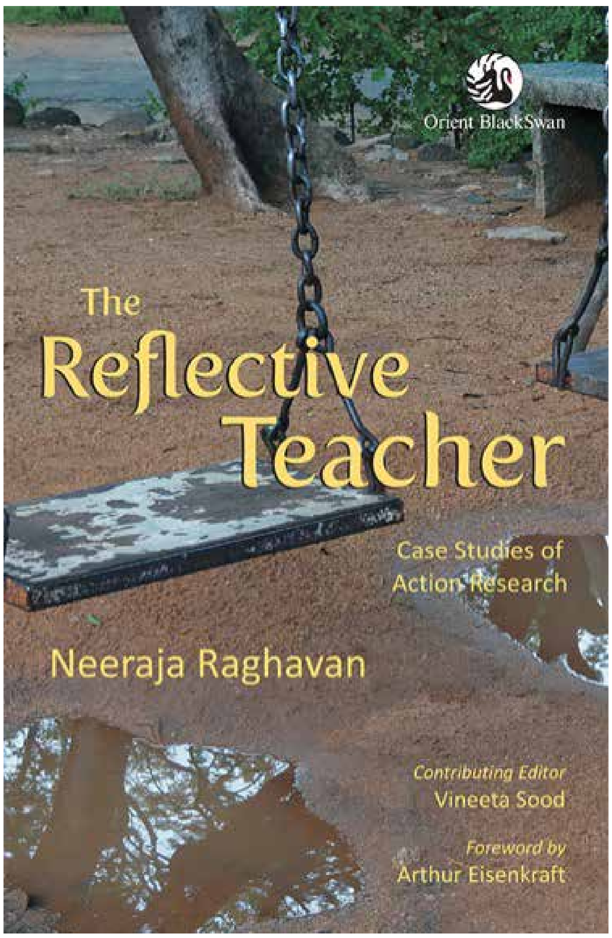


गुरुराज के. द्वारा समीक्षा

"यह पुस्तक समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में बहुत सामयिक है और चिन्तनशील शिक्षा के आन्दोलन का कारण बन सकती है।"

- एस.सी. बेहार, बोर्ड सदस्य, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन, बेंगलूरु

इस पुस्तक की लेखिका नीरजा राघवन के मन में शिक्षा को लेकर जो जुनून है उसके चलते वे कई सालों से इस क्षेत्र के साथ जुड़ी हुई हैं और उन्होंने बच्चों को पढ़ाने तथा शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक कार्य किया है। अपनी इस नवीनतम पुस्तक में उन्होंने अज़ीम प्रेमजी स्कूल, दिनेशपुर, उत्तराखण्ड के आठ शिक्षकों और प्रधानाध्यापक द्वारा किए गए पाँच महीनों (अगस्त-दिसम्बर 2013) के क्रियात्मक शोध के दौरान उभरे अनुभवों और सीखों



को व्यवस्थित रूप से निरूपित किया है। प्रमुख अन्वेषक के रूप में उन्होंने क्रियात्मक शोध की इस परियोजना का नेतृत्व सम्भाला जिसमें अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के सदस्यों ने सहायता की।

जैसा कि कहा गया है, 'इस पुस्तक का उद्देश्य शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षा में स्नातक और स्नातकोत्तर कोर्स करने वाले विद्यार्थियों, शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत गैर सरकारी संगठनों, शोधकर्ताओं और स्कूल के प्रधानाध्यापकों की सहायता करना है। विचार तो यही है कि किताब का दूसरा खण्ड उन पाठकों की जरूरतें पूरी करेगा जो अभ्यास के बारे में सीखना चाहते हैं जबकि अन्य दो खण्ड उनको रुचिकर लगेंगे जो इस अभ्यास को सैद्धान्तिक आधार भी देना चाहते हैं।' (पृष्ठ 27)

यह गतिविधि इस इरादे के साथ शुरू की गई कि सेवारत शिक्षकों को एक चिन्तनशील पेशेवर शिक्षक के रूप में पुष्पित किया जाए और ऐसा करने के लिए क्रियात्मक शोध का तरीका अपनाया जाए। अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की टीम ने यह प्रयास किया कि हर शिक्षक को गहराई के साथ समझा जाए, कक्षा सम्बन्धी प्रक्रियाओं का अवलोकन किया जाए, प्रत्येक शिक्षक के क्रियात्मक शोध का सुगमीकरण किया जाए, एक व्यवस्थित तरीके से शोध के प्रलेखन में उनकी मदद की जाए और अन्ततः क्रियात्मक शोध के संचालन से प्रत्येक शिक्षक ने जो कुछ भी सीखा उसकी जानकारी प्राप्त की जाए।

इस पुस्तक में तीन भाग हैं। पहले भाग में पाठक को क्रियात्मक शोध, चिन्तनशील अभ्यास व शिक्षक विकास और शिक्षकों के साथ काम करने की विधि के रूप में क्रियात्मक शोध चुनने के मानदण्ड के बारे में जानकारी दी गई है। यहाँ पर लेखिका ने इस क्षेत्र में अग्रणी लोगों जैसे डिवी, शुइन आदि के सिद्धान्तों को कई बार उद्धृत किया है और उनका जिक्र किया है। अध्ययन का उद्देश्य, जहाँ अध्ययन हुआ वह स्कूल, क्रियात्मक शोध करने वाले

शिक्षकों का विवरण, क्रियात्मक शोध शुरू करने से पहले उनकी धारणाएँ और मान्यताएँ आदि सारी बातें इस भाग में दी गई हैं।

शिक्षक के स्नैपशॉट्स वाला अध्याय बहुत दिलचस्प है। इसमें शिक्षक शिक्षण का पेशा चुनने का कारण, प्रेरणा, चुनौतियों और शिक्षण-अधिगम के बारे में अपने विचार बताते हैं।

दूसरे भाग में शिक्षकों के साथ काम करने वाले सुगमकर्ताओं की संक्षिप्त पृष्ठभूमि के बारे में बताया गया है। इसमें हर शिक्षक के व्यक्तिगत विवरण का संकलन और क्रियात्मक शोध के दौरान उस शिक्षक की एक कक्षा का अवलोकन भी दिया गया है (यह अवलोकन और संकलन सुगमकर्ताओं द्वारा किया गया है)। इसमें क्रियात्मक शोध के बारे में शिक्षकों द्वारा किए गए दस्तावेजीकरण के साथ में सुगमकर्ताओं की डायरी से ली गई संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी हैं। क्रियात्मक शोध के बाद किए गए वीडियो साक्षात्कार के प्रासंगिक निष्कर्षों को अँग्रेजी में दर्ज करने और अनुवाद करने के बाद इसमें शामिल किया गया है।

तीसरे भाग में क्रियात्मक शोध के दौरान शिक्षकों की अभिवृत्तियों, धारणाओं और अध्यापन कला में हुए बदलावों के बारे में पता लगाया गया है, जो नई अन्तर्दृष्टि मिली उसका वर्णन किया गया है और इन सबको इस क्षेत्र में हो रहे मौजूदा शोध की पृष्ठभूमि में रखते हुए शिक्षकों की पूर्व मान्यताओं और अभ्यासों से जोड़ा गया है।

क्या अध्ययन के समाप्त होने के बाद भी स्कूल में चिन्तनशील अभ्यास कायम रहेगा? इस प्रश्न के बारे में लेखिका का विचार है कि अध्ययन का उद्देश्य यह था कि क्रियात्मक शोध को एक सम्भावित साधन मानते हुए हर शिक्षक के भीतर से एक चिन्तशील अभ्यासी उभरकर सामने आए। इसलिए प्रत्येक शिक्षक द्वारा केवल एक क्रियात्मक शोध का चक्र पूरा कर लेने पर इसे 'पूर्ण' नहीं समझा जा सकता। न ही यह कहा जा सकता है कि हाँ, उद्देश्य 'पूरा' हो गया क्योंकि चिन्तन एक निरन्तर चलने वाला अभ्यास है।

शिक्षक को आजीवन शिक्षार्थी और चिन्तनशील अभ्यासी होना चाहिए

जैसा कि कहा गया है, 'स्कूल की कक्षा को कई तत्वों का मिश्रण माना जा सकता है जैसे युवा, ताजगी, जीवन शक्ति, पुनरुद्भवन। तीस या चालीस स्पन्दनशील मस्तिष्क, एक शिक्षक, सीखने वाले पाठ और पुस्तकें - कम से कम इतना तो होता ही है। तो फिर ऐसा क्यों है कि अक्सर शिक्षण-अधिगम एक यांत्रिक और दोहराव की प्रक्रिया बनकर रह जाती है?

जाने-अनजाने ही सही, पर एक ही पाठ, साल-दर-साल, एक ही तरीके से पढ़ाया जाता है। दिन-प्रतिदिन 'पाठ्यक्रम को पूरा करने', सत्र के मध्य में परीक्षाएँ संचालित करने और वार्षिक परीक्षाएँ आयोजित करने की जद्दोजहद चलती रहती है और शिक्षकों को नियमित और सुसंगत रूप से अपने पेशेवर विकास पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिल पाता।' (पृष्ठ 3)

इसलिए दिन-प्रतिदिन की चुनौतियों का सामना करने तथा विशिष्टता, अनिश्चितता और द्वन्द्व से पैदा होने वाले प्रश्नों का जवाब देने के लिए शिक्षकों को अपने भीतर चिन्तन का गुण विकसित करना चाहिए।

शिक्षक को आजीवन शिक्षार्थी और चिन्तनशील अभ्यासी बने रहना चाहिए। इस पुस्तक में उपलब्ध क्रियात्मक शोध के केस अध्ययन का बढ़िया दस्तावेजीकरण और सिद्धान्तों की जानकारी से प्रधानाध्यापकों, सेवारत शिक्षकों, शिक्षक बनने के इच्छुक विद्यार्थियों, शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत गैर सरकारी संगठनों और बच्चों के अधिगम की चिन्ता करने वाले लोगों को चिन्तनशील अभ्यासी बनने के लिए क्रियात्मक शोध करने के प्रयास करने की प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलेगा। पुस्तक के अन्त में दिए गए दिशानिर्देश और परिशिष्ट में दी गई प्रश्नावलियाँ तथा क्रियात्मक शोध के टेम्प्लेट क्रियात्मक शोध करने में सहायक होंगे।

गुरुराज के. इस लेख के लिखे जाने तक अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के बेंगलूरु शहरी जिला संस्थान में स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत थे। वे पढ़ने, बच्चों के साथ अधिगम की गतिविधियाँ करने और प्रकृति में प्रातःकालीन सैर करने में रुचि रखते हैं। उनसे ksgururaj@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल